## जिज्ञासा

### पंख होने पर भी पैंगुइन उड़ क्यों नहीं पाते?

ऑस्ट्रिच और इमू की तरह पैंगुइन भी पंख होने के बावजूद उड़ते नहीं हैं। कहते हैं आज से 650 लाख साल पहले पैंगुइन के पूर्वज उड़ पाते थे और धीरे-धीरे उनकी यह क्षमता खत्म हो गई। पैंगुइन के पूर्वज समुद्र के ऊपर उड़ते थे और भोजन की तलाश में समुद्र में डाइव लगाते थे। लाखों सालों पहले पैंगुइन की हड्डियां पक्षियों की तरह ही हल्की होती थी और वे उड़ पाते थे, पर समय के साथ उनकी हड्डियां भारी हो गईं और वजन बढ़ जाने से उनका खुद को हवा में उठाना नामुमकिन हो गया। हालांकि इन्हीं हड्डियों के कारण पैंगुइन अब पानी में डाइव बेहतर तरीके से लगा पाते हैं

### मैग्लेव ट्रेन

बच्चों तुमने पटरियों पर दौड़ती रेलगाड़ी तो देखी ही होगी पर क्या कभी तुमने पटरियों पर रेल को उड़ते हुए देखा है? नहीं न पर यह सच है। मैग्लेव ट्रेन ऐसी ही एक ट्रेन है जो विद्युतचुंबकीय बल के सहारे पटरी पर उड़ती हुई प्रतीत होती है। इस ट्रेन की रफ्तार बहुत तीव्र होती है किसी जेट विमान से बस थोड़ा कम यानी लगभग 580 किमी प्रति घंटा यह मुख्यत: दो प्रकार की तकनीक पर काम करती है। एक ईएमएस और दूसरी ईडीएस। ईएमएस यानि इलैक्ट्रोमैग्नेटिक सस्पेंशन तकनीक। इस तकनीक में ट्रेन को पटरियों से थोड़ा ऊपर उठा कर दौड़ाने के लिए ट्रेन के निचले भाग में इलैक्ट्रोमैग्नेट्स लगे होते हैं। दूसरी तकनीक यानी ईडीएस में पटरी और ट्रेन दोनों चुंबकीय प्रवाह के कारण विपरीत दिशा में विद्युत चुंबकीय बल छोड़ते हैं और इस तरह ट्रेन पटरी से ऊपर उठकर गति प्राप्त करती है। मैग्लेव ट्रेन फिलहाल जापान, इंग्लैंड, चीन व जर्मनी में देखने को मिल रही है पर जल्द ही हमारे देश में भी दिल्ली से मुंबई के बीच ऐसी एक ट्रेन दौड़ाने की योजना है। यह ट्रेन सबसे पहले इंग्लैंड में 1984 में सफलता पूर्वक चलाई गई थी। वैसे ऐसी ट्रेनों के निर्माण पर शोध कार्य 1960 में ही शुरू हो चुका था। जर्मनी और जापान ने भी 1990 में इससे होने वाले फायदों का ध्यान में रखकर इस पर काम शुरू कर दिया था।

### टमाटर दुनिया को चीन की देन है!

**अपने** लाल सुर्ख रंग से सब्जी मंडी की रौनक बढ़ाने वाला और खाने की मेज पर हर किसी को ललचाने वाला टमाटर सब्जियों में फल माना जाता है और फलों में सब्जी। टमाटर कितना प्राचीन है, ये ठीक से कोई नहीं बता पाता। लेकिन हाल के एक प्रयोग से इतना साबित हो गया कि कम से कम दो हजार वर्ष पहले टमाटर दुनिया में मौजूद था। चीन के एक समाचार पत्र के अनुसार, मध्य चीन के चेंगडू में, जो सिचुआन राज्य में है, अंवेषण के दौरान पुरात्तत्ववेत्ताओं को अनेक ऐसी वस्तुएं मिलीं, जो कोयले का रूप ले चुकी थी। एक कब्र के ऊपर उन्हें ऐसे बीज मिले, जो फलों के प्रतीत हो रहे थे। पुरात्तत्ववेत्ताओं ने उस स्थान को गीले-गरम कम्बल से ढक दिया और दूसरे स्थान पर अपने काम में लग गए। करीब एक माह बाद वे लौटे और कंबल उठाया तो पाया कि वहं लगभग 40 अंकुर निकल आए हैं। अंकुर बढ़ते रहे और पौधे बन गए और फिर उनमें फल भी लगने लगे। पहले तो ये फल खजूर जैसे लगे परंतु जब बाद में और बढ़े तो अंडे जितने हो गए। विशेषज्ञों ने इन फलों का तरह-तरह से परीक्षण किया और अंत में घोषित कर दिया कि से टमाटर ही हैं। अब इन फलों को लेकर चीन में गरमागरम बहस छिड़ी है और दावा किया जा रहा है कि टमाटर दुनिया को चीन की देन है।

# दुनिया का विशालकाय प्राणी व्हेल

**समुद्र** में रहने वाले प्राणियों में व्हेल एक विशाल मछली है। इसके स्पर्म व्हेल, किलर व्हेल, पायलट व्हेल, बेलुगा व्हेल आदि प्रजातियां होती हैं। ब्लू व्हेल इनमें सर्वाधिक विशालकाय होती है। इसकी लंबाई 115 फुट और वजन 150 से 170 टन तक होता है, जबकि कुछ व्हेल 11 फुट की भी होती हैं। व्हेल मछली सदियों से मानव सभ्यता के साथ भी जुड़ी है। अनेक देशों में व्हेल मछली के किस्से-कहानियां प्रचलित हैं।

समुद्र में 5 करोड़ वर्ष पूर्व व्हेल अस्तित्व में आई। अन्य स्तनधारी प्राणियों की तरह व्हेल हवा में सांस लेती है, उसका खून गर्म होता है बच्चों को दूध पिलाती है और उसके शरीर पर बाल होते हैं। व्हेल मछली की चमड़ी मोटी होती है, जिसे ब्लबर कहा जाता है। यह ऊर्जा को इकट्ठा करती है और उसके शरीर की रक्षा करती है।

इसकी एक रीढ़ होती है, कुछ हड्डियां और चार चेम्बर वाला हृदय होता है। इसकी गर्दन बहुत लचीली होती है, जो तैरते वक्त गोल घूम सकती है। यह ब्लोहोल्स से सांस लेती है। बैलीन व्हेल के दो ब्लोहोल्स होते हैं जबकि दांत वाली व्हेल को एक ब्लोहोल होता है। यह उनके सिर के ऊपर हिस्से में होते हैं। जब ब्लोहोल्स से व्हेल सांस लेती है तो उसके साथ काफी मात्रा में पानी भी उसके फेफड़ों में जमा हो जाता है जिसे बाद में फव्वारे के रूप में वापस बाहर कर देती है।

व्हेल की पूंछ के अंत में दो सिरे उसे तैरते समय मुड़ने में सहायक होते हैं। व्हेल अपने गले से बाहरी आवाज को ग्रहण करती है और वहां से वह आवाज अंदरूनी कान तक पहुंचती है। मादा व्हेल एक बार में एक बच्चे को जन्म देती है। वह अपने बच्चे को अपना दूध पिलाती है। उसका दूध टूथपेस्ट की तरह गाढ़ा होता है। बच्चे अपनी मां के साथ एक साल तक रहते हैं।

अधिकतर प्राणियों की तरह व्हेल भी आराम करती है। बाकी सभी जानवर तो सो सकते हैं, लेकिन व्हेल

कभी भी लंबे समय तक नहीं सोती। इसके शरीर का आकार इस तरह गोल होता है कि यदि यह सो जाए तो डूबकर मर जाती है। केवल इसका मस्तिष्क कुछ समय के लिए सोता है। पानी के ऊपर यह एक हमलावर की तरह उछलकर आती है और अपनी पूंछ जोर से पानी पर पटकती है।

व्हेल अपनी दूसरे साथियों से संपर्क करते समय एक मधुर ध्वनि निकालते हैं, जिसे व्हेल सांग कहा जाता है। यह ध्वनि बहुत तेज होती है। लगभग 20 हजार वाट के बराबर। यह मीलों दूर तक सुनाई देती है। व्हेल का भोजन मछलियां होता है।

17वीं शताब्दी में कुछ बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा भारी मात्रा में व्हेल का शिकार किया जाने लगा था। व्हेल को मारकर उसका मांस, तेल और परफ्यूम बनाया जाता था। 1986 में इंटरनेशनल व्हेलिंग कमीशन ने व्हेल के व्यावसायिक शिकार पर पाबंदी लगाई। हालांकि अब भी पूरी तरह से व्हेल का शिकार बंद नहीं हुआ है।

**कुछ रोचक बातें**

- व्हेल को सांस लेने के लिए हवा की जरूरत होती है।
- यह अधिक लंबे समय तक नहीं सोती। इसका आधा मस्तिष्क सोता है तो आधा जागता रहता है।
- व्हेल 30 मील प्रति घंटे की रफ्तार से तैर सकती है।
- व्हेल के शरीर पर बहुत बारीक बाल भी होते हैं।
- इसका खून गर्म होता है।
- व्हेल का सबसे बड़ा दुश्मन मनुष्य है।

## जानें यह भी

### कहां से आई बिल्ली

**बिल्ली** एक ऐसा जीव है जिसे ब्रिटेन और अमेरिका में सबसे ज्यादा पाला जाता है। शायद ही विश्व का कोई ऐसा महाद्वीप हों जहां पर जंगली या घरेलू बिल्लियां न पाई जातीं हों। बिल्ली अच्छी और बुरी दोनों हैं, यह एक ऐसा जीव है जो अपने मालिक की आज्ञाओं का पालन करता है। लाखों वर्ष से विकास की एक चरम प्रक्रिया ने इस जंगली जानवर को पालतु बनाया है। गौरतलब है कि 4000 ई.पू. मिश्र के लोग बड़े-बड़े घरों में अनाज का भंडारण करते थे। उनकी प्रमुख समस्या चूहों से उस अनाज के भंडार की रक्षा करना था। उस समय तक चूहों से अनाज की रक्षा करने के लिए उन लोगों के पास कोई युक्ति नहीं थी। मिश्रवासियों को जब यह पता चला कि जंगली बिल्ली को पालतु बनाकर वे अपने अनाज के भंडारों की चूहों आदि जैसे जीवों से हिफाजत कर सकते हैं तो उन्होंने इस जंगली बिल्लियों को घरों में पालना शुरू किया। जल्द ही जंगली बिल्लयां मिश्रवासियों के घर के सदस्य की तरह उनके परिवार में रम गई। यह बिल्लयों और आदमजाति की दोस्ती की शुरूआत थी। इसी प्रक्रिया के मद्देनजर मिश्रवासियों ने बिल्लयों की हत्या पर पाबंदी लगाई और उनके शिकार करने पर दंड का प्रावधान रखा। उन्होंने बिल्लयों को अपने धार्मिक चिन्हों में भी जगह दी और उसकी मृत्यु के पश्चात उसके शव की ममी बनाने की प्रक्रिया भी शुरू की। एक लम्बे समय तक मिश्र से बिल्ली को किसी अन्य जगह ले जाने पर रोक थी इसलिए कुछ लोगों ने तस्करी के जरिए इसे एशिया और यूरोप के अन्य देशों में भी भेजा। धीरे-धीरे मिश्र में बिल्लियों की संख्या बढ़ने लगी और मिश्रवासियों ने इसे रोम में बेचना शुरू किया। 18 वीं शताब्दी के अंत तक बिल्ली एक पालतु जीव बन गई।

# राजा के आगंन में आकर रहस्यमयी बातें बोला पंछी

**एक राजा** था उसके महल के आंगन में एक नीम का पेड़ था। रोज एक पंछी उस पेड़ पर आकर बैठता और चारों पहर अलग-अलग बातें कहता। पहले पहर में, 'किस मुंख दूध पिलाऊं' दूसरे पहर में 'ऐसा कहूं न दीख' तीसरे पहर में 'अब हम करबूं का' और चौथे पहर में 'सब विदवान मर जाएं'।

रोज उसकी बातें सुनकर राजा सोच में पड़ जाता लेकिन राजा को इन बातों को अर्थ समझ में नहीं आता। एक दिन उसने राजपुरोहित को बुलाया और पक्षी द्वारा कही गई सारे बातें बताकर उनका अर्थ पूछा। लेकिन पुरोहित ने थोड़ा समय मांगा और अपने घर लौट गया।

जब वह घर पहुंचा तो बहुत परेशान था। उसे देखकर पुरोहित की पत्नी ने परेशानी का कारण पूछा। तब पुरोहित ने पक्षी के प्रश्न कह सुनाए। प्रश्न सुनकर वह बोली- सब, इतनी सी बात। मैं राजा को सभे प्रश्नों के जवाब दे सकती हूं। कल मैं आपके साथ राजदरबार चलूंगी।

दूसरे दिन पुरोहित के साथ उसकी पत्नी भी राजदरबार में पहुंची। राजा ने पहले प्रश्न 'किस मुख्ज दूध पिलाऊं' का अर्थ पूछा। पुरोहित की पत्नी ने कहा 'महाराज ये पक्षी आधी बात बोलता है, पूरी बात इस प्रकार है- लंका में रावण भयो, बीस भुजा दस शीश, माता ओ कि जा कहे, किस मुंख दूध पिलाऊं? यानी लंक अमें रावण ने जन्म लिया, उसकी बीस भुजाएं और दस सिर हैं। यह देखकर माता कहती है कि मिअं उसे कौन-कौन से मुख से दूध पिलाऊं?

राजा ने दूसरा प्रश्न पूछा 'ऐसो कहूं न दीख?' पूरोहित की पत्नी ने बताया 'घर जम्ब नव दीप, बिना चिंता को ऐसो आदमी कहूं न दीख। यानी चारों दिशाओं, पृथ्वी, नवखंड सभी छान मारों पर बिना चिंता का आदमी कहीं नहीं मिलेगा।

राजा ने तीसरा प्रश्न पूछा- 'अब हम करबूं का'? पुरोहित की पत्नी बोली 'पांच वर्ष की कन्या साठे दई ब्याहे, बैठी करम बिसरूती, अब हम करबूं का? यानी पांच वर्ष की कन्या का विवाह एक बूढ़े से करवा दें तो वह अपनी किस्मत को कोसती हुई ये कहेगी 'अब मैं क्या करूं'।

चौथा प्रश्न था 'सब विदवान मर जाएं'। पुरोहित की पत्नी ने कहा कि 'विश्व सगंत जो करें, सुरा मांस जो खाएं, बिना सपरे भोजन करें, वे सब विदवान मर जाएं'। यानी जो विद्वान परस्त्री की सगंति करें, सुरा और मांस का सेवन करें और बिना स्नान के भोजन करें ऐसे विद्वान का मर जाना ही उचित है।

राजा इन सभी प्रश्नों के उत्तर जानकर बहुत खुश हुआ। उसने पुरोहित की पत्नी की बुद्धि को सराहा और खूब सारा धन देकर उसे विदा किया।

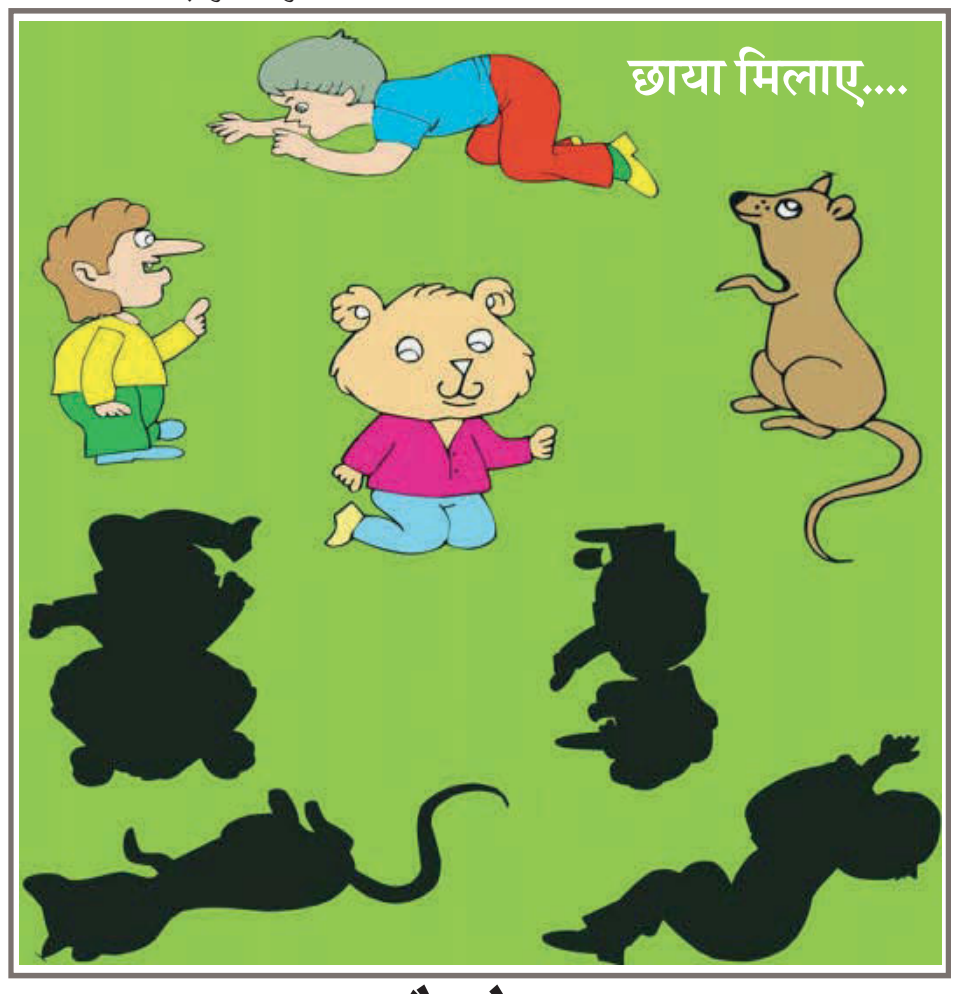


# बैटमेन

**1938** के शुरूआती समय में एक्शन कॉमिक्स में सुपरमैनं नामक काल्पनिक चरित्र की अपार सफलता ने डीसी कॉमिक्स को भी नए पात्र लोगों सामने लाने के लिए प्रेरित किया और इस तरह काफी कशमकश के बाद जन्म हुआ बैटमैन का। इस चरित्र को दो लोगों बॉब कॉन व बिल फिंगर ने मिलकर गढ़ा था। अपराधियों के दिलों में दहशत जगाने वाला यह किरदार सबसे पहले डीसी कॉमिक्स ने प्रकाशित किया था। बैटमैन की पहली कहानी थी। केस-ऑफ द केमिकल सिंडीकेटं जो कि सन् 1939 में आई थी। अपने खास चमगादड़ की शक्ल के काले लिबास में बैटमैन को बुरे लोगों से लड़ते हुए दिखाया गया पर इसके पास सुपरमैन की तरह कोई सुपरनैचुरल ताकत नहीं है। यह तो अपनी तीक्ष्ण बुद्धि, जासूसी दक्षता और तकनीकी ज्ञान के बलबूते अपराधियों को छकाता है।

बचपन में अपने माता-पिता की नृशंस हत्या का बदला लेने के लिए बैटमैन अपने आप को मानसिक व शारीरिक तौर पर मजबूत बनाता है और वह काल्पनिक शहर गोथम में अपने इस काम को अंजाम देता है। दरअसल बैटमैन का नाम ब्रूस वेन है जो कि आम जिंदगी में एक अमीर आदमी है। उसके दो सहयोगियों का नाम है रॉबिन व एल्फ्रेड। रॉबिन नामक पात्र को फिंगर के इस सुझाव के बाद बैटमैन की जिंदगी में शामिल किया गया कि प्रसिद्ध जासूसी पात्र शॉरलॉक होम्स की कहानियों में वॉटसन नामक किरदार की तरह बैटमैन को भी अपने मन की बात कहने के लिए किसी दोस्त की जरूरत है। इसकी लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि 1952 में प्रकाशित कहानी द्व्द माइटिएस्ट टीम इन द वर्ल्ड में पहली बार इसे सुपरमैन के साथ पेश किया गया जिसमें यह दर्शाया गया कि दोनों एक दूसरे की असली पहचान को जान लेते हैं। यह सिलसिला लगभग 1986 तक लगातार चला क्योंकि बच्चों को यह बेहद पंसद आया। इसके बाद समय-समय पर लोगों की बदलती रुचि को ध्यान में रखकर इस पात्र में अपेक्षित बदलाव किए गए। 1943 में पहली बार बैटमैन पर एक टेलीविजन धारावाहिक का प्रसारण हुआ जिसमें लिक्स विल्सन यह किरदार निभाने वाले पहले अभिनेता बने। अगले दो वर्षों में यह किरदार सुपरमैन टीवी के साथ-साथ रेडियो पर भी छाने लगा और 1949 में बैटमैन एंड रॉबिन शीर्षक से बने धारावाहिक ने इसे उन घरों में भी पहुंचा दिया जिन्होंने कभी कॉमिक्स खरीदी ही नहीं।

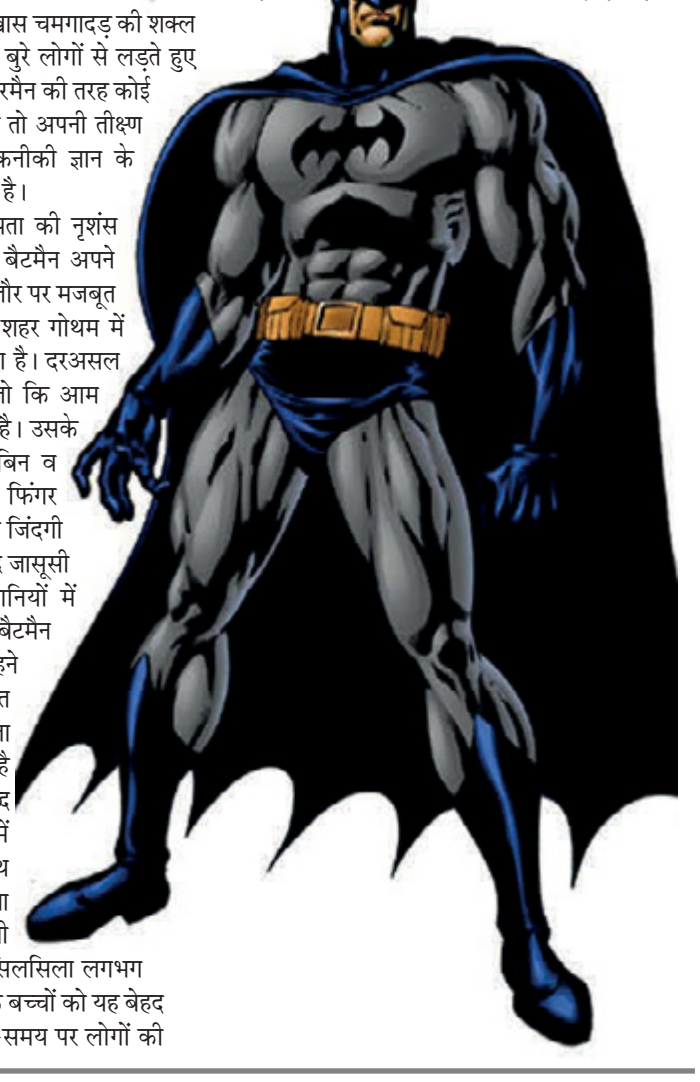

# कुटुर कुटर राग अलापे कुर्टरू

**छोटी गर्दन,** बड़े सिर और लाल रंग की बड़ी भारी चोंच वाला हरा बंसता घने जंगलों और बाग बगीचों में अक्सर दिखाई देता है। चूंकि पक्षी के पंख हरे होते हैं इसलिए इसे हरा बंसल भी कहा जाता है। यह सफाई पंसद पक्षी है। यह परिंदा निचले हिमाचल से लेकर गोदावरी तक मिलता है। यह पक्षी छोटे-छोटे समूहों में रहता है। इसका कद मैना से थोड़ा बड़ा होता है। नर और मादा लगभग एक समान होते हैं। उड़ान में यह कमजोर होता है। चोंच के पास उगे बालों की प्रारंभ में दाढ़ी समझ कर इसे बाश्बेट नाम दिया गया था। इनकी 72 जातियों में 16 भारतीय है। अमेरिका में 12, अफ्रीका में 37 जातियां पायी जाती हैं। हरे बसंता का मुख्य भोजन पीपल, बरगद जैसे वृक्षों के फल, सेमल के फूलों का मकरंद, कचनार के फूल और कीड़े-मकोड़े आदि हैं। यह गरमी की नीरव दोपहरी में भी बोलना बंद नहीं करता है।

गर्मी की तपती दोपहरी में भी कुटुरू-कुटुरू राग अलापने के कारण इसे कुर्टरू भी कहा जाता है।

नर और मादा मिलकर विशेषकर पुराने सड़ रहे वृक्षों या नरम लकड़ी के पेड़ों में कोटर बनाकर रहता है घरौंदा बनाते समय जो बुरादा कोटर से गिरता है। सामान्यतया मादा एक खेप में दो से चार अंडे देती है। अंडों को सेने और लालन-पालन का काम नर-मादा मिलकर करते हैं।